बात प्यास बुझाने की

पौधों को आवश्यकतानुसार पानी देते रहें।

पौधों की देखभाल

पौधे रोपने के लगभग 20–25 दिन बाद पौधों के चारों ओर आधे मीटर की दूरी तक के क्षेत्र में निराई करके घास व अन्य वनस्पति उखाड़ दें तथा पौधों की गुड़ाई करें।

प्रथम निराई व गुड़ाई के दौरान मरे हुए पौधों को बदलें

पहली निराई व गुड़ाई के लगभग एक माह बाद दूसरी निराई व गुड़ाई करें इसी मास में पौधारोपण में 10 ग्राम प्रति पौधे के हिसाब से यूरिया खाद डालें तथा बाद में पानी डालें।

सितम्बर महीने में फिर से निराई व गुड़ाई करें। पौधे से डेढ़ मीटर की दूरी पर पौधे के चारों ओर मिट्टी का गोल घेरा बना दें ताकि नमी बनी रहे।

मिट्टी को गुड़ाई करके पौधे के चारों ओर गोल घेरा बनाएं

समय–समय पर घास निकालें व पौधों के आस–पास निराई व गुड़ाई करें। पौधों को जानवरों से बचाएं। पौधों को दीमक से बचाव हेतु क्लोरोपाईरीफोस का प्रयोग एक मिलीलीटर प्रतिलीटर पानी के हिसाब से घोल बना कर करें। अब इस घोल को हर पौधे की जड़ के पास मिट्टी में छोटा छेद बनाकर डालें।

जमीन की प्रकृति और उसके अनुकूल वृक्ष प्रजातियां

जमीन की प्रकृति	अनुकूल वृक्ष
शिवालिक क्षेत्र (मोरनी की पहाड़ियां)	चीड़, तुन, ब्यूहल, शहतूत, खैर, खिड़क आदि।
शिवालिक की तलहटी की जमीन	खैर, तुन, शीशम, हरड़, आम, आंवला, पपीता, अमरूद, बहेड़ा, पापलर, सफेदा, बांस, शहतूत, अनार, छल, ढाक, कीकर, नीम।
मैदानी क्षेत्र	शीशम, आम, आंवला, शहतूत, जामुन, नीम, जमोआ, कीकर, अमलतास, इमली, महुआ।
कल्लर भूमि	कैजुरीना, पापड़ी, अर्जुन, मस्कट, फ्रांस, कीकर, फरस, पीपल, साल्ट बैटल।
अरावली का भूड़ एवं मैदानी क्षेत्र	आईलैंथस, जंड़ी, रोहेड़ा।
अरावली की पहाड़ियां	नीम, जंडी, अमलतास, गूगल, धौंक, गंगेरन, अंजन, इमली।
पश्चिमी अर्ध शुष्क क्षेत्र	कीकर, बेरी, लसूड़ा, शहतूत, नीम, फ्रांस आदि।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हरियाणा के आदेशानुसार

आओ मिलकर वृक्ष लगाएं,
हरियाणा को स्वर्ग बनाएं।।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हरियाणा
फोन: 0172-2563988

प्रचार एवं प्रशिक्षण परिमण्डल
पंचकूला, वन एवं वन्य जीव.विभाग, हरियाणा, पंचकूला
फोन : 0172-2565398

वृक्षारोपण एवं देखभाल

वन एवं वन्य जीव विभाग
हरियाणा

वृक्षारोपण क्यो?

शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो वृक्षों/वनों के लाभ से परिचित न हो। वनों से न केवल हमें इमारती लकड़ी, चारा, औषधि तथा अन्य लघु वन उपज प्राप्त होती है, बल्कि ये पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम व इसके संरक्षण तथा प्राकृतिक सन्तुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वातावरण में कार्बन डायऑक्साइड के स्तर को कम करते हैं तथा इस प्रकार ये ग्लोबल वार्मिंग जैसी भयंकर समस्या को कम करने में सहायक होते हैं। इनसे हमें प्राणवायु ऑक्सीजन प्राप्त होती है जो कि हमारे व प्राणी जगत के लिए अनिवार्य है। वनों को धरती के हरे फेफड़े कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। वन वन्य प्राणियों को आश्रयंस्थली प्रदान करते हैं। वन जैव विविधता के बाग हैं। यह सर्वविदित है कि बिना जैव विविधता संरक्षण के प्राकृतिक सन्तुलन जो कि मानव जीवन के लिए बहुत जरूरी है, को बनाए रखना लगभग असम्भव है।

वृक्ष वर्षा की बूंदों व पानी के वेग को कम करके भूमि कटाव को रोकते हैं तथा जमीन की उर्वरकता को बढ़ाते हैं। कोविड महामारी ने हमें वृक्षों की महत्ता बड़ी अच्छी तरह से सिखा दी है।

पौधे कहां लगाएं?

खाली वन भूमि तथा खेतों में परती भूमि में, संस्थानीय भूमि में, पंचायत व सामुदायिक भूमि आदि में।

पौधे कहां से मिल सकते हैं?

वन विभाग व बागवानी विभाग।

पौधे कैसे हों?

पौधारोपण के लिए सामान्य रूप से दो प्रकार के पौधे लगाए जा सकते हैं। आमतौर पर अधिकांश पौधारोपण 60 सैं.मी. (2 फुट) से 120 सैं.मी. (4 फुट) की ऊँचाई के पौधों से होता है जबकि टॉल प्लांट्स के पौधारोपण हेतु उनकी ऊँचाई 180 सैं.मी. (6 फुट) या उससे अधिक होनी चाहिए।

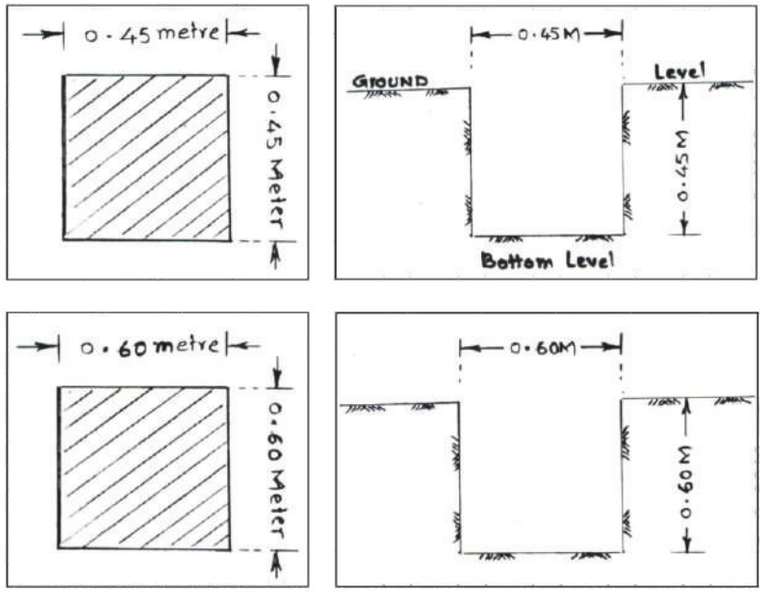

पौधा लगाने से पहले क्या करें?

पौधारोपण स्थल पर 45 सैं.मी. लम्बे 45 सैं.मी. चौड़े और 45 सैं.मी. गहरे गड्ढे फरवरी–मार्च में उत्तर–दक्षिण दिशा में खोदें। कतारों में गड्ढे इस प्रकार स्थित हो कि साथ लगती कतार के गड्ढे स्टैगर्ड (Staggered) फैशन में हों।

गड्ढों का साइज लगाने वाले पौधे के साईज के अनुसार रखना चाहिए। टॉल प्लांटस के रोपने हेतु गड़ढों का साईज कम से कम 60 सैं.मी. x 60 सैं.मी. x 60 सैं.मी. या इससे अधिक होना चाहिए। गड्ढे से गड्ढे की दूरी व लाइन से लाइन की दूरी चयनित प्रजाति अनुसार रखें। किसी भी कीमत पर 4x4 से कम नहीं हो।

पौधों की रक्षा के लिए उचित बाड़ की व्यवस्था करें

वर्षा ऋतु में पौधे रोपित करें। रोपण से पहले गड्ढे से निकाली गई मिट्टी में कम से कम 2 कि.ग्रा. गोबर की गली–सड़ी खाद व दीमकनाशक दवाई क्लोरोपाईरीफोस मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। तदुपरांत ऊपर से करीब 5 सैं.मी. गहराई तक गड्ढे को खाली रखकर मिश्रण भर दें ।

पौधे रोपना

पौधों को रोपित करने से पहले गड्ढे में खाद एवं दीमकनाशक दवाई मिली मिट्टी का मिश्रण गड्ढे के तल से 10–12 सैं.मी. ऊँचाई तक भरें अर्थात लगभग 35 सैं.मी. गहराई तक गड्ढा खाली रखें।

पौलीथीन की थैली इत्यादि जिसमें पौधा लगाया गया है को उतारें अथवा चाकू से ऊपर से नीचे तक चीर दें। इसके बाद पौधे को थैली/थैले/गाची से बाहर मिट्टी के पिंड सहित निकालें। पौलीथीन की थैली/थैले/गाची को पूरी तरह से अलग कर दें।

पौधे को मिट्टी के पिंड के साथ आंशिक रूप से भरे हुए गड्ढे के बीचों–बीच रखें। अब इसके चारों तरफ मिट्टी डालें और पैरों से अच्छी तरह दबा दें। गड्ढे में कम से कम 10 सैं.मी. जगह खाली रखें ताकि पौधे के लिए पर्याप्त पानी का भण्डारण हो सके।